महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर E-PAPER, सोमवार, 16 फरवरी 2026
MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

विशेष: महर्षि दयानंद सरस्वती की 202 वीं पुण्यतिथि

वेदों से भी अर्जित होगा विकसित भारत 2047 का लक्ष्य

स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती की विचारधारा आज भी आधुनिक भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। उनका सपना था एक ऐसा समाज जो शिक्षित, तर्कशील, नैतिक और आत्मनिर्भर हो। विकसित भारत 2047 की परिकल्पना में उनकी शिक्षाएँ मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती हैं।

दयानंद ने “वेदों की ओर लौटो” का नारा देकर भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक और नैतिक जड़ों से जोड़ने का प्रयास किया। उनकी विचारधारा स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, वैज्ञानिक सोच और नैतिक जीवन पर आधारित थी। विकसित भारत के लिए सामाजिक समानता, लैंगिक समानता, तकनीकी विकास और नैतिक नेतृत्व आवश्यक है—और ये सभी तत्व दयानंद के दर्शन में मौजूद हैं।

उन्होंने राष्ट्रभक्ति को धर्म का अंग माना और नागरिकों में कर्तव्यबोध, अनुशासन और देश सेवा की भावना विकसित करने पर जोर दिया। आज जब भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य रखता है, तब दयानंद की विचारधारा युवाओं को नैतिक, शिक्षित और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देती है। इसलिए कहा जा सकता है कि स्वामी दयानंद सरस्वती की विचारधारा विकसित भारत की वैचारिक नींव बन सकती है।

समाज परिवर्तन के प्रेरक

सामाजिक क्रांति

- जन्म आधारित जाति व्यवस्था का विरोध
- कर्म और गुण को ही सच्चा आधार बताया
- छुआछूत और ऊँच-नीच के खिलाफ आवाज

नारी उत्थान

- स्त्री शिक्षा का समर्थन
- विधवा विवाह का समर्थन
- बाल विवाह का विरोध
- महिलाओं को समान अधिकार

धार्मिक सुधार

- अंधविश्वास और पाखंड का विरोध
- मूर्ति पूजा और कर्मकांड की आलोचना
- वेदों को सत्य और ज्ञान का स्रोत बताया

संगठन और जागरण

- 1875 में आर्य समाज की स्थापना
- समाज में नैतिकता और राष्ट्रभक्ति का प्रसार
- शिक्षा और समानता पर बल

शिक्षा जागरण के अग्रदूत

स्वामी दयानंद सरस्वती शिक्षा को समाज परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण का प्रमुख साधन मानते थे। उनका विचार था कि अज्ञान ही समाज की सभी बुराइयों का मूल कारण है, इसलिए शिक्षा के माध्यम से ही समाज को जागरूक और प्रगतिशील बनाया जा सकता है।

उन्होंने वैदिक और आधुनिक शिक्षा के समन्वय पर बल दिया। गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करते हुए उन्होंने शिक्षा को चरित्र निर्माण, नैतिकता और अनुशासन से जोड़ा। वे विज्ञान, गणित, दर्शन, भाषा और नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहते थे। दयानंद स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और महिलाओं को समान शैक्षिक अवसर देने की वकालत करते थे।

आर्य समाज द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और डी.ए.वी. विद्यालयों का नेटवर्क उनकी शिक्षा नीति का प्रत्यक्ष परिणाम है। उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र सेवा और समाज सुधार से जोड़ा और कहा कि शिक्षित नागरिक ही सशक्त राष्ट्र की नींव रखते हैं। इस प्रकार स्वामी दयानंद सरस्वती ने आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वैदिक दृष्टि, आधुनिक मिशन

प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल

अपने मूल स्वरूप में विश्वविद्यालय वैदिक सिद्धांतों—सत्य, ऋत ,यज्ञ तथा स्वाध्याय पर आधारित होकर संचालित होता है।

तेज़ तकनीकी प्रगति, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और बौद्धिक बेचैनी के इस युग में, विश्वभर के विश्वविद्यालय अपने उद्देश्य को पुनर्परिभाषित करने का प्रयास कर रहे हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में, हमारा संकल्प केवल व्यावसायिक कौशल से युक्त स्नातकों का निर्माण करना नहीं है, बल्कि ऐसे व्यक्तियों का पोषण करना है जो चरित्र, स्पष्टता और सभ्यतागत चेतना में दृढ़ता से स्थापित हों। जब हम इक्कीसवीं सदी में आगे बढ़ते हैं, तो हम वैदिक परंपरा की शाश्वत ज्ञान-परंपरा में दृढ़ता से स्थापित होकर आगे बढ़ते हैं।

हमारा विश्वविद्यालय अपना नाम और प्रेरणा महान समाज-सुधारक और ऋषि महर्षि दयानंद सरस्वती से प्राप्त करता है, जिनका जीवन सत्य, तर्कसंगत अनुसंधान और वैदिक ज्ञान के पुनर्जागरण के लिए समर्पित था। उनकी विरासत का सम्मान करते हुए, हमने एक विशिष्ट शैक्षणिक पहल आरंभ की है: महर्षि दयानंद सरस्वती पर एक एक-क्रेडिट पाठ्यक्रम का प्रारंभ, जिसे इस विश्वविद्यालय के प्रत्येक छात्र द्वारा, विषय की परवाह किए बिना, अनिवार्य रूप से अध्ययन किया जाएगा। यह पाठ्यक्रम केवल ऐतिहासिक अभिमुखता वाला नहीं है इसका उद्देश्य परिवर्तनकारी है। यह विद्यार्थियों को उन सिद्धांतों से परिचित कराता है, आलोचनात्मक चिंतन,नैतिक साहस, सामाजिक सुधार और बौद्धिक ईमानदारी जिनका उदाहरण महर्षि दयानंद ने प्रस्तुत किया। इस पहल के माध्यम से, हम यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि प्रत्येक स्नातक केवल एक डिग्री ही नहीं, बल्कि भारत की नैतिक और दार्शनिक नींव की गहरी समझ भी साथ लेकर आगे बढ़े।

आगे बढ़कर परिसर जीवन की लय में भी विस्तृत होती है। प्रत्येक शैक्षणिक दिवस का आरंभ गायत्री मंत्र के गुंजायमान उच्चारण से होता है—एक ऐसा आह्वान जो बुद्धि के आलोक और संकल्प की शुद्धि का प्रतीक है।

हमारे प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्यालयों में कार्य प्रार्थना से प्रारंभ होता है, जो हमें स्मरण कराता है कि श्रद्धा की भावना से किया गया कर्तव्य उच्चतर अर्थ प्राप्त करता है।

महत्वपूर्ण आयोजनों से पूर्व चाहे वे दीक्षांत समारोह हों, सम्मेलनों हों या संस्थागत उपलब्धियों के अवसर हम हवन का आयोजन करते हैं, जिसमें समरसता, स्पष्टता और सामूहिक सद्भाव का आह्वान किया जाता है। ये प्रथाएँ मात्र औपचारिक अनुष्ठान नहीं हैं; वे उस विश्वदृष्टि की अभिव्यक्तियाँ हैं जो शिक्षा को एक पवित्र साधना के रूप में देखती है।

अपने मूल में, विश्वविद्यालय वैदिक सिद्धांतों—सत्य, ऋत अर्थात् ब्रह्मांडीय व्यवस्था), यज्ञ अर्थात् निस्वार्थ योगदान), और स्वाध्याय अर्थात् आत्म-अध्ययन)—पर संचालित होता है। सत्य हमारे अनुसंधान का मार्गदर्शन करता है, व्यवस्था हमारे प्रशासन को अनुशासित करती है; निस्वार्थ सेवा हमारी सामुदायिक पहुँच को प्रेरित करती है; और आत्मचिंतन हमारी शैक्षणिक संस्कृति को आकार देता है।

हमारा विश्वास है कि मूल्यों से पृथक ज्ञान उद्देश्यहीन शक्ति बन जाता है। सके विपरीत, नैतिक चेतना में स्थापित ज्ञान सामाजिक परिवर्तन की एक शक्ति बन जाता है।

सत्य हमारे अनुसंधान का मार्गदर्शन करता है, व्यवस्था हमारे प्रशासन को अनुशासित करती है, निस्वार्थ सेवा हमारी सामुदायिक पहुँच को प्रेरित करती है; और आत्मचिंतन हमारी शैक्षणिक संस्कृति को आकार देता है। हमारा विश्वास है कि मूल्यों से पृथक ज्ञान उद्देश्यहीन शक्ति बन जाता है। इसके विपरीत, नैतिक चेतना में स्थापित ज्ञान सामाजिक परिवर्तन की एक शक्ति बन जाता है।

पत्रकारिता के उन विद्यार्थियों के लिए जो इस बुलेटिन की तैयारी करते हैं, मैं विशेष प्रोत्साहन का संदेश देना चाहता हूँ। आपकी लेखनी में विवेक, उत्तरदायित्व और साहस का प्रतिबिंब होना चाहिए—वे सद्गुण जो वैदिक भावना में गहराई से निहित हैं। परिसर जीवन के वृत्तांतकार के रूप में, आप उसके आदर्शों के संरक्षक भी हैं।

यह ज्ञात रहे कि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय मात्र एक उच्च शिक्षा संस्थान नहीं है; यह एक जीवंत केंद्र है जहाँ प्राचीन ज्ञान और आधुनिक अनुसंधान का संगम होता है। परंपरा और नवाचार के सामंजस्य के माध्यम से, हम ऐसे स्नातकों का निर्माण करने का प्रयास करते हैं जो बौद्धिक रूप से सक्षम, नैतिक रूप से दृढ़ और सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध हों।

स्वामी दयानंद सरस्वती के विचार: आज के युवाओं के लिए प्रेरणा

आज का युग विज्ञान, तकनीक और तेज़ बदलाव का युग है। मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने जीवन को सुविधाजनक बना दिया है, लेकिन इसके साथ ही युवाओं के सामने अनेक नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। सूचना की अधिकता, भ्रामक खबरें, नैतिक मूल्यों में गिरावट, बेरोज़गारी, प्रतिस्पर्धा का दबाव और मानसिक तनाव आज के युवाओं की प्रमुख समस्याएँ बन गई हैं।

ऐसे समय में यदि हम इतिहास के महान विचारकों के जीवन और विचारों को देखें, तो महर्षि दयानंद सरस्वती के सिद्धांत आज के युवाओं के लिए अत्यंत प्रेरणादायक और मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने जीवन में सत्य, तर्क और विवेक को सर्वोच्च स्थान दिया। वे किसी भी परंपरा या विश्वास को बिना तर्क के स्वीकार करने के विरोधी थे। उनका मानना था कि मनुष्य को सोचने, समझने और प्रश्न करने का अधिकार होना चाहिए। आज जब सोशल मीडिया पर अफवाहें और झूठी सूचनाएँ बहुत तेजी से फैलती हैं, तब स्वामी दयानंद की तर्कपूर्ण सोच युवाओं को सही और गलत के बीच अंतर करना सिखाती है। उनका यह विचार आज के डिजिटल युग में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

शिक्षा को लेकर स्वामी दयानंद के विचार बहुत दूरदर्शी थे। वे शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्त करने का साधननहीं मानते थे, बल्कि उसे मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक, चरित्रवान, अनुशासित और समाज के प्रति उत्तरदायी बनाना है। आज के युवाओं के लिए यह संदेश अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अक्सर नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण को कम महत्व दिया जाता है। यदि युवा स्वामी दयानंद की शिक्षाओं को अपनाएँ, तो वे न केवल सफल पेशेवर बनेंगे, बल्कि आदर्श नागरिक भी बन सकेंगे।

स्वामी दयानंद सरस्वती नारी शिक्षा और समानता के प्रबल समर्थक थे। उस समय समाज में महिलाओं को शिक्षा और अधिकारों से वंचित रखा जाता था, लेकिन उन्होंने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देने की बात कही। उनका मानना था कि पुरुष और महिला दोनों समाज के दो मजबूत स्तंभ हैं और किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब महिलाओं को समान अवसर दिए जाएँ। आज जब महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता और महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, तब स्वामी दयानंद के विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक दिखाई देते हैं।

उनका जीवन संघर्ष, त्याग और सेवा का प्रतीक था। उन्होंने समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए निरंतर प्रयास किए। उनका ग्रंथ “सत्यार्थ प्रकाश” आज भी सामाजिक और धार्मिक चिंतन का महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जाता है।

स्वामी दयानंद सरस्वती के विचार आज के युवाओं के लिए एक दीपक की तरह हैं, जो उन्हें अज्ञान, भ्रम और निराशा के अंधकार से निकालकर ज्ञान, सत्य और कर्तव्य के प्रकाश की ओर ले जाते हैं।

एमडीएस विश्वविद्यालय में विचारों से व्यवहार तक बदलाव की शुरुआत

सामूहिक प्रार्थना करते हुए शिक्षकगण एवं विद्यार्थी

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अब केवल एक शैक्षणिक संस्थान नहीं, बल्कि विचार और संस्कार की प्रयोगशाला बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने यह संकेत दिया है कि आने वाले समय में शिक्षा के साथ-साथ नैतिक अनुशासन, आध्यात्मिक चेतना और भारतीय दर्शन को संस्थान की कार्यसंस्कृति का हिस्सा बनाया जाएगा। इस दिशा में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित एक उच्चस्तरीय बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक का केंद्रबिंदु यही रहा कि जिस महापुरुष के नाम पर विश्वविद्यालय स्थापित है, उसके विचार विश्वविद्यालय के दैनिक जीवन में भी दिखाई देने चाहिए।

विश्वविद्यालय के सभी शिक्षण विभागों और प्रशासनिक इकाइयों में प्रतिदिन कक्षाओं और कार्यालयी कार्य की शुरुआत प्रार्थना सभा से की जाएगी। इसमें परीक्षा अनुभाग, लेखा एवं स्थापना शाखा, पुस्तकालय और औषधालय सहित सभी इकाइयाँ शामिल होंगी। विश्वविद्यालय प्रशासन का मानना है कि इस पहल से विद्यार्थियों और कर्मचारियों में अनुशासन, एकाग्रता और सकारात्मक सोच को बढ़ावा मिलेगा।इसके साथ ही विश्वविद्यालय परिसर में सामूहिक सहभागिता को मजबूत करने के उद्देश्य से भरत मुनि ऑडिटोरियम में साप्ताहिक सामूहिक प्रार्थना सभा आयोजित की जाएगी। इन सभाओं में विद्यार्थी, शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, कर्मचारी भाग लेंगे।

प्रार्थना सभाओं के आयोजन और समन्वय की जिम्मेदारी मुख्य कुलानुशासक प्रो. अरविंद पारीक तथा छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. सुभाष चंद्र को सौंपी गई है।

बैठक में विश्वविद्यालय के प्रमुख शैक्षणिक और संस्थागत कार्यक्रमों को लेकर भी अहम निर्णय लिए गए। प्रशासन ने तय किया है कि शैक्षणिक सत्रारंभ, स्थापना दिवस, दीक्षांत समारोह, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, संगोष्ठियों और विशेष आयोजनों की शुरुआत अब वैदिक हवन के साथ की जाएगी। इसका उद्देश्य आयोजनों को केवल औपचारिक कार्यक्रम न रखकर भारतीय सांस्कृतिक परंपरा से जोड़ना है। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यक्रम में भी बदलाव किए जाएंगे।

इसके तहत महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन और सिद्धांतों पर आधारित एक मूल्य-वर्धित पाठ्यक्रम शुरू किया जाएगा। यह एक क्रेडिट का पाठ्यक्रम होगा और इसे सभी विद्यार्थियों के लिए संचालित किया जाएगा।

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और तर्कशील सोच को विकसित करने पर जोर दिया जाएगा। विश्वविद्यालय प्रशासन ने यह भी स्पष्ट किया कि इन निर्णयों का उद्देश्य किसी परंपरा को थोपना नहीं, बल्कि शिक्षा को मूल्यों से जोड़ना है।

एकात्म मानववाद का समकालीन संदेश:
राष्ट्रनिर्माण का मार्ग दिखाती दीनदयाल उपाध्याय की विचारधारा

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के सिंधु शोध पीठ द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 58वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में देशभर के शिक्षाविदों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने भाग लेकर दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानव दर्शन' की समकालीन प्रासंगिकता पर मंथन किया।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता शिक्षाविद् एवं चिंतक श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद आज भी समाज और राष्ट्र के समग्र विकास का सशक्त मार्गदर्शक है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे भारतीय ज्ञान परंपरा को समझें, आत्मसात करें और राष्ट्रहित में सकारात्मक भूमिका निभाएं। श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय का जीवन संघर्ष, त्याग और राष्ट्रनिष्ठा का अनुपम उदाहरण है। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया और व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं को त्यागकर राष्ट्रसेवा को अपने जीवन का ध्येय बनाया। उन्होंने स्पष्ट किया कि एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलन और समन्वय की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जो आज के वैश्वीकरण के दौर में अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि किसी भी विदेशी विचारधारा को अंधानुकरण से स्वीकार करने के बजाय उसे भारतीय परिस्थितियों और मूल्यों के अनुरूप अपनाना चाहिए। स्वदेशी परंपराओं को समयानुकूल विकसित करना ही वास्तविक प्रगति का मार्ग है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय केवल विचारक नहीं, बल्कि कर्मयोगी थे। उन्होंने विश्वविद्यालयों में भारतीय दृष्टि आधारित शिक्षा, अध्ययन और शोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया।

सिंधु शोध पीठ के निदेशक प्रो. सुभाष चंद्र ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया, जबकि कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संगोष्ठी में अनेक शिक्षाविद्, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को राष्ट्रनिर्माण की दिशा में प्रेरित करना रहा।

महर्षि दयानंद सरस्वती महाविद्यालय में दयानंद जयंती पर संगोष्ठी

राष्ट्रनिर्माण के लिए उनके आदर्श आज भी प्रासंगिक

अजमेर. महर्षि दयानंद सरस्वती की 202वीं जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में एक प्रेरणादायी संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता पर गहन विमर्श हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पवित्र हवन से किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ चिंतक मुरलीधर जी ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के प्रति पूर्ण समर्पण का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने कहा कि “वेदों की ओर लौटो” का संदेश केवल धार्मिक आह्वान नहीं था, बल्कि सामाजिक जागरण और राष्ट्रीय चेतना का उद्घोष था, जिसने भारतीय समाज को नई दिशा दी। अपने संबोधन में उन्होंने रेखांकित किया कि किसी महापुरुष को समझने का सही तरीका यह है कि उसके विचारों को वर्तमान संदर्भों में लागू किया जाए। स्वामी दयानंद ने अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए नारी शिक्षा, विधवा विवाह, स्वभाषा, स्वदेशी और समानता के सिद्धांतों को सशक्त आधार दिया। आर्य समाज की स्थापना के माध्यम से उन्होंने व्यापक सामाजिक सुधार आंदोलन खड़ा किया और स्वतंत्रता चेतना को भी ऊर्जा दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय महर्षि की ऋषि-दृष्टि को व्यवहार में उतारने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि परिसर में प्रतिदिन गायत्री मंत्र के प्रसारण की व्यवस्था लागू की गई है, जिससे विद्यार्थियों में सकारात्मकता और मानसिक संतुलन विकसित हो। अतिथियों को 'सत्यार्थ प्रकाश' भेंट करने की परंपरा प्रारंभ की गई है तथा महर्षि दयानंद शोधपीठ और चेयर के माध्यम से वैदिक अध्ययन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। कुलगुरु ने यह भी जानकारी दी कि सभी विद्यार्थियों के लिए महर्षि दयानंद पर एक क्रेडिट का पाठ्यक्रम अनिवार्य किया गया है। पर्यावरण विभाग को वेद-आधारित पारिस्थितिकी, यज्ञ और हवन केवैज्ञानिक पक्ष पर शोध परियोजनाएँ तैयार करने का आह्वान किया गया। साथ ही राज्य सरकार द्वारा विश्वविद्यालय में महर्षि दयानंद सरस्वती पैनोरमा निर्माण का निर्णय भी उल्लेखनीय बताया गया।

महर्षि दयानंद शोधपीठ की निदेशक एवं दयानंद चेयर की प्रभारी आचार्य प्रो. ऋतु माथुर ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद का वैदिक चिंतन भारतीय नवजागरण का आधार बना। उन्होंने शोधपीठ की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि वैदिक अध्ययन को अकादमिक विमर्श का हिस्सा बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास हो रहे हैं।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अनेक प्राध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अंत में कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा संचालन डॉ. विवेक शर्मा ने किया। संगोष्ठी ने यह स्पष्ट किया कि महर्षि दयानंद सरस्वती के सत्य, कर्म और राष्ट्रनिष्ठा के आदर्श आज भी समाज और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरक प्रकाशस्तंभ बने हुए हैं।

राजस्थान सरकार की सौगात

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय में बनेगा महर्षि दयानंद सरस्वती का भव्य पैनोरमा

पैनोरमा स्थापना का प्रावधान

- राज्य सरकार द्वारा प्रस्तुत राजस्थान बजट में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में स्वामी दयानंद सरस्वती पैनोरमा स्थापित करने की घोषणा।
- परियोजना को सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक विरासत के संरक्षण की महत्वपूर्ण पहल बताया गया।
- विश्वविद्यालय को सांस्कृतिक एवं पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की योजना।

पैनोरमा की विषयवस्तु

- आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन, दर्शन और राष्ट्र निर्माण में योगदान का प्रदर्शन।
- सामाजिक सुधार, नारी उत्थान, शिक्षा, जाति प्रथा के विरोध और वैदिक धर्म के प्रचार से जुड़े प्रसंगों का चित्रण।
- चित्रों, मॉडल्स, शिल्पकृतियों एवं डिजिटल माध्यमों के जरिए ऐतिहासिक घटनाओं का जीवंत प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य और महत्व

- विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों और आमजन के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में विकसित करना।
- युवाओं को वैदिक विचारधारा और भारतीय दर्शन से जोड़ना।
- भारतीय संस्कृति एवं वैदिक परंपरा के मूल्यों को नई पीढ़ी तक पहुंचाना।

माननीय कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल जी के मार्गदर्शन में, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थी – लोकेश कश्यप, नेहा शर्मा और मानसी माहेश्वरी के संयुक्त प्रयास से टैबलॉयड पेपर का प्रकाशन।